अध्याय 27

अय्यूब का उत्तर (भाग 2)

कुछ विद्वानों ने अध्याय 27 के कुछ भागों को सोपर का खोया हुआ भाषण माना है।[1] एल्बर्ट बार्नस ने इस भाषण को सोपर का बताने पर आपत्ति की और तीन ठोस तर्क दिए: (1) ऐसी कोई प्राचीन हस्तलिपी या संस्करण नहीं है जो ऐसे विचार का समर्थन करता हो। (2) यदि यह सोपर का भाषण होता, तो हमें उम्मीद होनी थी कि अय्यूब ने इसका उत्तर दिया होगा। (3) मित्रों के सभी भाषणों का आरम्भ ''उसने उत्तर देकर कहा'' के साथ होता क्योंकि एक फार्मूला है जो यहां नही मिलता। बार्नस ने ऐसे विचार को केवल ''अनुमान'' कहा।[2]

फ्रांसिस आई. एंडरसन ने सुझाव दिया कि अध्याय 27 तीनों मित्रों के साथ चर्चा की अय्यूब की अंतिम बात है। जो अध्याय 3 को संतुलित करती है। इसका आरम्भ ''अय्यूब ने और भी अपनी गूढ़ बात उठाई और कहा'' के नये फार्मूले के साथ होता है जो इसे शेष बातचीत से अलग कर देता है। एंडरसन ने और समझाया:

> अय्यूब कहीं पर परमेश्वर का इनकार नहीं करता, इसलिए उसके लिए यहां पर दृढ़ता से अपनी बात कहना असंगत नहीं है। अय्यूब और उसके मित्रों के बीच असहमति इस बात पर नहीं है कि परमेश्वर धर्मी है या नहीं; बल्कि इस बात पर है कि विशेष घटनाओं में और विशेषकर अय्यूब के अनुभवों में परमेश्वर का न्याय कैसे काम करता हुआ दिखाई देता है।[3]

अय्यूब की खराई की पुष्टि हुई (27:1-6)

[1]अय्यूब ने और भी अपनी गूढ़ बात उठाई और कहा, [2]''मैं परमेश्वर के जीवन की शपथ खाता हूँ जिसने मेरा न्याय बिगाड़ दिया, अर्थात् उस सर्वशक्तिमान के जीवन की जिसने मेरा प्राण कड़ुआ कर दिया। [3]क्योंकि अब तक मेरी साँस बराबर आती है, और परमेश्वर का आत्मा मेरे नथुनों में बना है। [4]मैं यह कहता हूँ कि मेरे मुँह से कोई कुटिल बात न निकलेगी, और न मैं कपट की बातें बोलूँगा। [5]ईश्वर न करे कि मैं तुम लोगों को सच्चा ठहराऊँ, जब तक मेरा प्राण न छूटे तब तक मैं अपनी खराई से न हटूँगा। [6]मैं अपना धर्म पकड़े हुए हूँ और उसको हाथ से जाने न दूँगा; क्योंकि मेरा मन जीवन के किसी दिन के लिये मुझे दोषी नहीं ठहराता।''

पहले ही की तरह अय्यूब ने एक बार फिर से अपने निर्दोष होने का दावा किया (6:29, 30; 9:15, 20, 21; 23:10-12)। उसने आवेश में आकर मित्रों के आरोपों का विरोध करते हुए अपनी खराई का दावा किया।

आयत 1. इस अध्याय के आरम्भ में असामान्य बात होती है: **अय्यूब ने और भी अपनी गूढ़ बात उठाई और कहा।** इब्रानी धर्मशास्त्र में ''और भी अपनी गूढ़ बात उठाई'' क्रिया (*wayyosep, वेयोसेप*) और साधारण क्रिया (*śe'eth, सेथ*) को दर्शाता है। इनका अनुवाद क्रमश: ''और वह और कहने के लिए आगे बढ़ा'' और ''बहस करना'' हो सकता था। ''बात'' शब्द (*mashal, माशाल*) का अनुवाद आम तौर पर ''नीतिवचन'' किया जाता है (नीतिवचन 1:1, 6; 10:1; 25:1; 26:7, 9)। इसका अर्थ ''नीतिवचन'' (भजन संहिता 78:2) या ''उपमा'' (भजन संहिता 44:14) भी हो सकता है। कई मामलों में इस शब्द का अर्थ भविष्यवाणी की ''बात'' होता है (गिनती 23:7, 18; 24:3, 15, 20, 21, 23; देखें यशायाह 14:4; मीका 2:4)। इब्रानी में आयत 1 का फार्मूला 29:1 में भी दोहराया गया है।

आयतें 2-4. इन आयतों में एक जटिल शब्द है जिसमें अय्यूब ने अपने निर्दोष होने को बनाए रखा। शपथ का आरम्भ एक फार्मूले के साथ होता है: **''मैं परमेश्वर के जीवन की शपथ खाता हूँ''** (देखें 2 शमूएल 2:27)।[4] इसका विस्तार इस आरोप के साथ होता है कि परमेश्वर ने अय्यूब का **न्याय बिगाड़ दिया** और उसका **प्राण कड़ुआ कर दिया** था। अय्यूब की कड़वाहट का कारण यह तथ्य था कि परमेश्वर ने उसकी सुनवाई नहीं की थी। उसका मानना था कि उसके साथ न्याय नहीं हुआ था।

''क्योंकि अब तक मेरी साँस बराबर आती है, और परमेश्वर का आत्मा मेरे नथुनों में बना है।'' इन शब्दों को शपथ के अतिरिक्त फार्मूले (देखें 2 राजाओं 2:2; 4:30), या शायद ''उन शर्तों के रूप में जो अय्यूब को अपनी शपथ से बांधे हुए थी।''[5] अय्यूब ने परमेश्वर को जीवन का ''सांस'' देने वाले के रूप में पहचाना (देखें उत्पत्ति 2:7)।

वास्तविक शपथ आयत 4 में मिलती है: **''मैं यह कहता हूँ कि मेरे मुँह से कोई कुटिल बात न निकलेगी, और न मैं कपट की बातें बोलूँगा।''** मित्रों द्वारा अय्यूब पर ''कुटिल'' होने का दबाव इस बात के लिए था कि उस पर कष्ट उसके किसी बहुत बड़े पाप के कारण आए थे। पूरी बातचीत के दौरान अय्यूब ने इस आरोप को सिरे से नकार दिया था। जैसा कि शेक्सपियर ने बड़ा सुन्दर बयान किया है: ''सबसे बढ़कर: हिम्मत रखो, और आगे बढ़ो, जैसे रात के बाद दिन आता है, फिर तुम किसी मनुष्य के सामने शर्मिंदा नहीं होगे।''[6]

आयत 5. ईश्वर न करे अतिरिक्त शपथ का परिचय है (देखें उत्पत्ति 44:17; 1 शमूएल 2:30; 12:23; 22:15; 24:6; 2 शमूएल 20:20)। शैतान ने बड़े विश्वास के साथ दावा किया था कि यदि अय्यूब पर विपत्तियां आती हैं तो वह परमेश्वर का इनकार कर देगा (2:4, 5)। फिर भी ऐसा नहीं हुआ। पूरे भाषणों के दौरान अय्यूब ने बार बार दावा किया कि वह **सच्चा** है (1:1 पर टिप्पणियां देखें)।

आयत 6. ''मैं अपना धर्म पकड़े हुए हूँ और उसको हाथ से जाने न दूँगा।'' अय्यूब पाप रहित सिद्धता का दावा नहीं कर रहा था परन्तु वह उस सही आचरण के मानक को थामे हुआ था जो उसके जीवन की विशेषता थी। **''मेरा मन जीवन के किसी दिन के लिये मुझे दोषी नहीं ठहराता।''** अय्यूब के मन में इस बात का कोई खेद नहीं था क्योंकि उसका विवेक परमेश्वर के सामने शुद्ध था।

भक्तिहीनों की दुर्दशा (27:7-23)

अय्यूब इस बात को समझता था कि दुष्टों को परमेश्वर उनके दुष्ट कामों के कारण दण्ड देता है। यह उस विराग के बोध का हिस्सा है जिसमें उसे लग रहा था कि उसे दुष्ट ही समझा जा रहा है।

''दुष्ट व्यक्ति की क्या आशा है?'' (27:7-12)

7''**मेरा शत्रु दुष्टों के समान, और जो मेरे विरुद्ध उठता है वह कुटिलों के तुल्य ठहरे।**
8**जब परमेश्वर भक्तिहीन मनुष्य का प्राण ले ले, तब यद्यपि उसने धन भी प्राप्त किया हो,**
तौभी उसकी क्या आशा रहेगी? 9**जब वह संकट में पड़े, तब क्या परमेश्वर उसकी दोहाई**
सुनेगा? 10**क्या वह सर्वशक्तिमान में सुख पा सकेगा, और हर समय परमेश्वर को पुकार**
सकेगा? 11**मैं तुम्हें परमेश्वर के काम के विषय शिक्षा दूँगा, और सर्वशक्तिमान की बात मैं**
न छिपाऊँगा। 12**देखो, तुम लोग सब के सब उसे स्वयं देख चुके हो, फिर तुम व्यर्थ विचार**
क्यों पकड़े रहते हो?''

आयतें 7-10. मेरा शत्रु अय्यूब के **विरुद्ध** लोगों को अर्थात उन्हें कहा गया है जो उसके विरुद्ध लड़ते थे। भाषणों में **दुष्टों** की बात बार-बार हुई है (8:13 पर टिप्पणियां देखें)। स्पष्टतया ऐसे लोगों को कोई आशा नहीं होती! ''कोई आशा नहीं'' हिंदी भाषा में (अनुवादक) सबसे बुरी टिप्पणियों में से एक है। परिवारों ने इसे मरणासन बीमार रोगियों के लिए डॉक्टरों से सुना है। पौलुस ने अन्यजाति मसीहियों को बताया कि एक समय था जब वे ''मसीह से अलग ... और आशाहीन और जगत में ईश्वर रहित थे'' (इफिसियों 2:12)। उसने विश्वासियों को अपने प्रियजनों की मृत्यु पर ''दूसरों के समान जिन्हें आशा नहीं'' शोक न करने का आदेश दिया (1 थिस्सलुनीकियों 4:13)। इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने कहा, ''वह आशा हमारे प्राण के लिए ऐसा लंगर है जो स्थिर और दृढ़ है, और परदे के भीतर तक पहुंचता है'' (इब्रानियों 6:19)। जब दुष्ट **संकट में पड़े** तो **तब क्या परमेश्वर उसकी दोहाई सुनेगा?** नहीं। **वह सर्वशक्तिमान में सुख** न **पा सकेगा, और** न **हर समय परमेश्वर को पुकार सकेगा?**

आयत 11. अय्यूब ने अपने पूरे जीवन में अपने संसार में **परमेश्वर के दान को देखा था**। उसे यह आवश्यकता नहीं थी कि उसके मित्र उसे परमेश्वर की सामर्थ के बारे में बताएं। इस तथ्य से कि उसने अपनी व्यक्तिगत परिस्थितियों में *महसूस* किया दु:ख सहने की शक्ति से उसकी परेशानी बढ़ गई।

आयत 12. अय्यूब ने मित्रों पर **व्यर्थ विचार** करने का आरोप लगाया। मूलतया मूल भाषा में ''व्यर्थ बात से व्यर्थ बातें'' (*hebel thehbalu, हेबेल थेहबालू*) कहा गया है। यह ''उस व्यर्थता की गहनता है जिसे अय्यूब द्वारा मित्रों की बताया गया।''[7]

''दुष्ट मनुष्य का भाग'' (27:13-23)

13''**दुष्ट मनुष्य का भाग परमेश्वर की ओर से यह है, और बलात्कारियों का अंश जो**
वे सर्वशक्तिमान के हाथ से पाते हैं, वह यह है, कि 14**चाहे उसके बच्चे गिनती में बढ़ भी**

जाएँ, तौभी तलवार ही के लिये बढ़ेंगे, और उसकी सन्तान पेट भर रोटी न खाने पाएगी।
[15]उसके जो लोग बच जाएँ वे मरकर क़ब्र को पहुँचेंगे; और उसके यहाँ की विधवाएँ न
रोएँगी। [16]चाहे वह रुपया धूल के समान बटोर रखे, और वस्त्र मिट्टी के किनकों के तुल्य
अनगिनित तैयार कराए, [17]वह उन्हें तैयार भले ही कराए, परन्तु धर्मी उन्हें पहिन लेगा, और
उसका रुपया निर्दोष लोग आपस में बाँटेंगे। [18]उसने अपना घर कीड़े का सा बनाया, और
खेत के रखवाले की झोपड़ी के समान बनाया। [19]वह धनी होकर लेट जाए परन्तु वह गाड़ा
न जाएगा; आँख खोलते ही वह जाता रहेगा। [20]भय की धाराएँ उसे बहा ले जाएँगी, रात को
बवण्डर उसको उड़ा ले जाएगा। [21]पुरवाई उसे ऐसा उड़ा ले जाएगी, और वह जाता रहेगा,
और उसको उसके स्थान से उड़ा ले जाएगी। [22]क्योंकि परमेश्वर उस पर विपत्तियाँ बिना
तरस खाए डाल देगा, उसके हाथ से वह भाग जाना चाहेगा। [23]लोग उस पर ताली बजाएँगे,
और उस पर ऐसी सुसकारियाँ भरेंगे कि वह अपने स्थान पर न रह सकेगा।''

इस पद्य में अय्यूब ने दुष्ट लोगों की कमज़ोरी की चर्चा की। कइयों ने अय्यूब की यहां कही गई बात और अध्याय 24 में कही गई बात के बीच विरोधाभास देखा है। परन्तु अध्याय 24 में अय्यूब इस तथ्य पर विचार कर रहा था कि उन्हें तुरन्त दण्ड नहीं मिलता जबकि यहां पर उसने उनके ''भाग'' या ''अंश'' का दावा किया।

> भाषणों में अंतर यह है कि पहले वाले भाषण में उसने दुष्टों के अस्थाई रूप से बच निकलने पर ध्यान दिया था और इस भाषण में उसने उनके ''अंश'' पर यानी जो अंतिम ''धरोहर'' के रूप में उन्हें मिलना था उस पर विचार किया। इसमें कोई विरोधाभास नहीं, केवल वर्तमान और भविष्य के समय में अंतर है।[8]

आयत 13. अय्यूब ने **दुष्ट ... बलात्कारियों** के **भाग** और **अंश** के अपने विवरण को आरम्भ किया। ''भाग'' (*cheleq, चेलेक़*) और ''अंश'' (*nach^{a}lah, नाचालाह*) या ''धरोहर'' पराजित देश की लूट के भार का संकेत देता है।[9] यहां पर उनका इस्तेमाल एक विडम्बना को दर्शाता है जो पुस्तक में और जगह पर (12:1, 2; 20:29 पर टिप्पणियां देखें) है।

आयतें 14-23. अय्यूब ने परमेश्वर की सेवा करने से इनकार करने वालों के ऊपर आने वाली विपत्तियों का विवरण विस्तार से दिया। कुछ प्रकार से यह आयतें बहुत कुछ वैसे ही लगती हैं जो उसके तीन मित्रों ने पहले कहा था (देखें 4:17-21; 5:12-14; 11:20; 15:20-35; 18:5-21; 20:5-29)। इस समानता के कारण कुछ टीकाकार इस तथ्य के कुछ या सारे भाग को मित्रों में से एक या दूसरों के नाम का बताते हैं। परन्तु इस बात को ध्यान में रखा जाना चाहिए कि एक उल्लेखनीय अपवाद के साथ परमेश्वर के बारे में अय्यूब का विचार वही था जो उसके मित्रों का था और वह अपवाद यह है कि वह जानता था कि वह उतना बड़ा पापी नहीं था जितना वे उसे बता रहे थे। यही उसकी दुविधा थी! वह उस प्रकार से दुःख क्यों उठा रहा था जिस प्रकार से उसे लगता था कि परमेश्वर से विमुख व्यक्ति पर आने चाहिए?

अय्यूब ने दुष्ट बलात्कारियों द्वारा सहे जाने वाले अलग-अलग दण्डों के नाम लिए:

1. **''चाहे उसके बच्चे गिनती में बढ़ भी जाएँ, तौभी तलवार ही के लिये बढ़ेंगे''**

(27:14)। उनकी बढ़ी हुई संख्या दुष्ट व्यक्ति के परिवार को आगे चलाने की गारंटी नहीं होनी थी।

2. ''**और उसकी सन्तान पेट भर रोटी न खाने पाएगी**'' (27:14)। इस दु:ख का वर्णन पहले दुष्टों द्वारा सताए जाने वालों के स्पष्ट विवरण में किया गया है (24:5, 6)।
3. ''**उसके जो लोग बच जाएँ वे मरकर क़ब्र को पहुँचेंगे**'' (27:15)। ''मरकर'' के लिए शब्द, *maweth* (*मावेथ*), का अनुवाद आम तौर पर ''मृत्यु'' होता है।
4. ''**और उसके यहाँ की विधवाएँ न रोएँगी**'' (27:15)। इब्रानी बाइबल का ''उसके यहां की विधवाएं'' (देखें KJV; ASV), सुझाव देता है कि दुष्ट व्यक्ति बहुविवाही था। परन्तु अधिकतर संस्करणों में ''उसके पीछे बचने वाले'' की ''विधवाओं'' के सम्बन्ध में बहुवचन (''उनकी'') के रूप में सर्वनाम शब्द है [NASB]। शायद उन्होंने आस पास के दु:ख से इतने प्रभावित होना था कि उनके पास शोक करने का समय भी नहीं होना था।
5. उसका **रुपया** और **वस्त्र** और **धर्मी** और **निर्दोष** लोगों को दे दिया जाएगा (27:16, 17)। बुद्धि के साहित्य में यह नियम कहीं और जगह दिया गया है (नीतिवचन 28:8; सभोपदेशक 2:26)।
6. उसका धन नष्ट हो जाएगा (27:18, 19)। दुष्ट व्यक्ति ने **अपना घर कीड़े का सा बनाया** था। NIV में ''पतंगे के कोकून'' और NJPSV में ''पंछी के घोंसले'' है। बल उस निर्माण के कमज़ोर होने और अस्थाई होने पर है। यही बात कटाई के समय में **रखवाले** द्वारा बनाई गई **झोपड़ी** पर लागू होती है (यशायाह 1:8)।[10]
7. ''**पुरवाई उसे ऐसा उड़ा ले जाएगी**'' (27:20-22)। बचने की कोई सम्भावना नहीं है। (''पुरवाई'' के सम्बन्ध में 15:1, 2 पर टिप्पणियां देखें।)
8. **लोग** उसका मज़ाक उड़ाएंगे (27:23)। क्योंकि लोगों का किसी पर **ताली बजाना** और **उस पर सुसकारियां भरना** ठट्ठे और अपमान का प्रतीक थे (देखें यिर्मयाह 49:17; विलापगीत 2:15; यहेजकेल 27:36; सपन्याह 2:15)।

एक बार फिर से, हमें ध्यान देना होगा कि ये बातें *सामान्यीकरण* हैं और *हर* परिस्थिति में *सब* दुष्टों पर लागू नहीं होतीं।

सेमुएल कॉक्स ने अय्यूब की घोषणा और अध्याय 20 में सोपर और उसके मित्रों की सामान्य घोषणा के बीच अंतर का एक अच्छा संक्षिप्त कथन दिया है:

> यदि उसका निष्पक्ष न्याय करें तो हम भी उस अंत पर जो *तब* और *अब* ध्यान में था विचार करें। *तब* उसका झुकाव सोपर के अनावश्यक और अविचारी नीति की ओर था [अध्याय 20] कि दुष्टों को उनके पाप का उचित दण्ड देकर *हमेशा और उसी समय* पकड़ लिया जाता है, और ऐसी बातें *केवल* दुष्टों पर ही आती हैं, किसी और पर *नहीं*। फिर उसे कुछ सबसे दुष्ट लोगों को मिलती रहने वाली समृद्धि की और भयंकर और चूर चूर कर देने वाली विपत्तियों की, जो कम से कम कुछ भले लोगों को सहने का कहा जाता

है, बात करके, इसके बिल्कुल बीच में रहने वाले प्रत्यक्ष और विख्यात तथ्यों को उद्धृत करते हुए अधूरी और कठोर नीति मिली। परन्तु *अब* उसका अंत अलग था, और वह इस तक अलग रास्ते से जाता है। मित्रों ने चाहा था कि वह उनकी बात से सहमत हो जाए कि दुष्टों की ऐसी ही हालत होती है। और वह उनसे मिलता है, उनके दिए विवरण की सच्चाई को नकार कर नहीं, बल्कि उन्हें यह दिखाते हुए कि *यह बात उस पर लागू नहीं होती*।[11]

अध्याय 27 में अय्यूब और उसे मित्रों के बीच भाषणों का दौर खत्म हो जाता है। वे निर्दोष लोगों पर दु:ख की समस्या का कोई समाधान नहीं कर पाए। रॉबर्ट एल. आल्डन ने लिखा है, ''संयोग से सत्य लोगों के मतों से निर्धारित नहीं होता। अब हमें तीनों मित्रों से कुछ और सुनने को नहीं मिलेगा पर वास्तविक बुद्धि के स्रोत अय्यूब के पास अभी चर्चा करने को बहुत कुछ है।''[12]

प्रासंगिकता

हमारी अखण्डता को बनाए रखना (27:1-6)

अपनी बातचीत को आगे बढ़ाते हुए अय्यूब ने इस बात का अफ़सोस किया कि परमेश्वर ने उसका ''न्याय बिगाड़ दिया'' (27:1, 2)। बेशक अपने इस बड़े क्लेश में वह शैतान की भूमिका से अनभिज्ञ था (देखें 1:6-2:13)। अपनी कठिनाइयों के लिए परमेश्वर को दोषी ठहराना मनुष्य की पुरानी आदत है। रूत की पुस्तक में नाओमी ने अपने पति और दो पुत्रों को खो दिया। अपने शोक में उसने बेतलहम की महिलाओं के सामने शिकायत की:

> उस ने उन से कहा, मुझे नाओमी [सुहावना] न कहो, मुझे मारा [शोकमय] कहो, क्योंकि सर्वशक्तिमान् ने मुझ को बड़ा दु:ख दिया है। मैं भरी पूरी चली गई थी, परन्तु यहोवा ने मुझे छूछी करके लौटाया है। सो जब कि यहोवा ही ने मेरे विरुद्ध साक्षी दी, और सर्वशक्तिमान ने मुझे दु:ख दिया है, फिर तुम मुझे क्यों नाओमी कहती हो? (रूत 1:20, 21)।

अय्यूब का चाहे यह मानना था कि परमेश्वर ने बिना कारण उसको दण्ड दिया है पर उसने अपनी खराई को बनाए रखने का निश्चय किया। अय्यूब ने तीन संकल्प लिए जो आज हमारे लिए अनुकरणीय हैं।

अय्यूब ने झूठ न बोलने का संकल्प किया। उसने कहा, ''क्योंकि अब तक मेरी साँस बराबर आती है, और परमेश्वर का आत्मा मेरे नथुनों में बना है। मैं यह कहता हूँ कि मेरे मुँह से कोई कुटिल बात न निकलेगी, और न मैं कपट की बातें बोलूँगा'' (27:3, 4)। यहां अय्यूब ने किसी ऐसे भयंकर पाप में भाग न लेने का संकल्प लिया जो उसने वास्तव में किया नहीं था। उसने अपनी परिस्थिति को अपनी खराई को बिगाड़ने नहीं देना था। परमेश्वर के लोगों को सच्चाई का झण्डाबरदार होना आवश्यक है। मसीही लोगों के रूप में हमारा परम उदाहरण यीशु मसीह है, ''न तो उसने पाप किया, और न उसके मुंह से छल की कोई बात निकली'' (1 पतरस 2:22)। इसके उलट सब झूठों को आग की झील में जगह मिलेगी और परमेश्वर की उपस्थिति से निकाल दिया जाएगा (प्रकाशितवाक्य 21:8; 22:15)।

उसने बड़े लोगों के दबाव के आगे न झुकने का संकल्प लिया। उसने कहा, ''ईश्वर न करे कि मैं तुम लोगों को सच्चा ठहराऊँ, जब तक मेरा प्राण न छूटे तब तक मैं अपनी खराई से न हटूँगा'' (27:5)। अय्यूब ने अपने मित्रों की बात मानकर कुछ ऐसा बोलने से इनकार कर दिया जो झूठ था या उसे करना गलत था। मित्र अय्यूब के नज़दीकी रहे होंगे। आखिर वे ''उसके साथ हमदर्दी जताने और उसको तसल्ली देने आए'' थे (2:11)। वे उसकी हालत पर रोए थे और उन्होंने उसके दु:ख के कारण दु:ख में अपने कपड़े फाड़ डाले थे (2:12)। वे सात दिन और सात रात तक राख के ढेर पर उसके साथ बैठे भी रहे थे (2:8, 13)। उन्होंने उसे बार बार अपने जीवन को परमेश्वर के साथ सही करने के लिए मनाने की कोशिश की – चाहे उनका यह मानना गलत था कि अय्यूब ने कोई भयंकर पाप किया है। अय्यूब डोला नहीं था और न ही हमें डोलना चाहिए।

उसने अपनी बदनामी न करने का संकल्प लिया। उसने कहा, ''मैं अपना धर्म पकड़े हुए हूँ और उसको हाथ से जाने न दूँगा; क्योंकि मेरा मन जीवन के किसी दिन के लिये मुझे दोषी नहीं ठहराता'' (27:6)। अय्यूब यह नहीं कह रहा था कि वह पाप रहित था बल्कि यह कर रहा था कि वह भक्तिपूर्ण जीवन जी रहा था। वह कुछ ऐसा नहीं करना चाहता था जिससे उसे अफ़सोस हो या मन दुखे। हमें अपने कामों पर और दूसरों पर उनके प्रभाव पर विचार करना चाहिए। क्या हम अपने आप की, अपने परिवारों की, मसीह की, या उसकी कलीसिया की बदनामी कर रहे हैं? यह जानते हुए कि उन्होंने अपनी या अपने प्रभु की बदनामी नहीं की है, अपने मूल्यों के साथ समझौता न करने वालों को रात को चैन से नींद आनी चाहिए।

सारांश: अपने जीवनों में विपत्ति आने पर हमें परमेश्वर को दोष नहीं देना चाहिए। इसके बजाय हमें याद रखना चाहिए कि हमें नष्ट करने का इरादा शैतान का है (यूहन्ना 10:10; 1 पतरस 5:8)। परमेश्वर इन परिस्थितियों से निपटने के लिए हमें सहायता देगा ओर हमें सामर्थ देगा (मत्ती 6:13)। अय्यूब की तरह हम सच्ची निष्ठा वाले वे लोग बन सकते हैं जिन्हें संसार हिला न सके।

दुष्टों का अंश (27:13-23)

बाइबल की चर्चा में ''अंश'' शब्द को सुनकर हम आम तौर पर पुराने नियम में इस्राएलियों के लिए कनान देश या नये नियम में मसीही लोगों के लिए स्वर्ग की प्रतिज्ञा पर विचार करने लगते हैं। परन्तु अय्यूब ने विडम्बनापूर्वक ढंग से ''अंश'' शब्द का इस्तेमाल दुष्टों को दिए जाने वाले दण्ड के अर्थ में किया। उसने अपनी टिप्पणियों की भूमिका यह कहते हुए दी, ''दुष्ट मनुष्य का भाग परमेश्वर की ओर से यह है, और बलात्कारियों का अंश जो वे सर्वशक्तिमान के हाथ से पाते हैं, वह यह है'' (27:13)। अय्यूब ने आगे उन विपत्तियों का विवरण दिया जो दुष्ट व्यक्ति के परिवार पर (27:14, 15), उसकी सम्पत्ति पर (27:16-19), और उसके स्मरण पर पड़नी थी (27:20-23)।

यह पद्य हमें इस बात के महत्व का स्मरण कराता है कि हमारा जीवन परमेश्वर के सामने प्रतिदिन कैसा होना चाहिए। यीशु ने हमें परमेश्वर से अपने सारे मन से प्रेम करना और अपने पड़ोसियों से अपने समान प्रेम रखना सिखाया (मत्ती 22:36-40)। उसने हमें पहले परमेश्वर के

राज्य को ढूंढ़ने को कहा (मत्ती 6:33)। उसने हमें पृथ्वी पर धन जमा न करने बल्कि स्वर्ग में खज़ाने जोड़ने के लिए भी कहा (मत्ती 6:19-21)। परन्तु आज्ञा न मानने वालों का अंश अनन्त विनाश होगा (मत्ती 25:46)। अपने लिए जीवन जीने वाले लोग न्याय के दिन बुरी तरह से निराश होंगे। यीशु ने दो महत्वपूर्ण प्रश्न पूछे जो हमारे लिए विचार किए जाने के योग्य हैं, ''यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा? मनुष्य अपने प्राण के बदले क्या देगा?'' (मत्ती 8:36, 37)। डी. स्टिवर्ट

टिप्पणियां

[1]एच. एच. रोअले ने 27:7-23 को ''सोपर का तीसरा भाषण'' कहा। (एच. एच. रोअले, *अय्यूब,* द सेंचुरी बाइबल, न्यू सीरीज़ [ग्रीनवुड, साउथ कैरोलाइना: द अटिक प्रैस, Inc., 1970], 221.) नॉर्मन सी. हेबल, ने कहा ''इस अध्याय की केवल पहली सात आयतें अय्यूब की हैं'' शेष अध्याय ''अनाम बातचीत'' वाला है। (नॉर्मन सी. हेबल, *द बुक ऑफ़ अय्यूब,* द कैम्ब्रिज बाइबल कॉमैंट्री [कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रैस, 1975], 139, 141.) अधिक जानकारी के लिए देखें *परिशिष्ट: भाषणों के तीसरे ''अधूरे'' दौर की समस्या,* पृष्ठ 186-87. [2]ऐल्बर्ट बार्नस, *अय्यूब,* नोट्स ऑन द ओल्ड टैस्टामैंट, सम्पा. रॉबर्ट फ्रू (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1950), 2:54-55. [3]फ्रांसिस आई. एंडरसन, *अय्यूब, ऐन इंट्रोडक्शन ऐंड कॉमैंट्री,* टिंडेल ओल्ड टैस्टामैंट कॉमैंट्रीस (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1974), 219-20. [4]''यहोवा के जीवन की शपथ'' का फार्मूला पुराने नियम में बहुत पाया जाता है क्योंकि इस्राएली लोग आम तौर पर परमेश्वर के निजी नाम का इस्तेमाल करते थे (न्यायियों 8:19; रूत 3:13; 1 शमूएल 14:39; 1 राजाओं 2:29; 2 राजाओं 2:2; यिर्मयाह 4:2; होशे 4:15)। [5]विलियम डी. रेबर्न, *ए हैंडबुक ऑन द बुक ऑफ़ अय्यूब* (न्यू यॉर्क: यूनाइटेड बाइबल सोसायटीस, 1992), 483. [6]शेक सपियर *हेमलेट* 1.3.78-80. [7]रेबर्न, 488. [8]होमेर हेली, *ए कॉमैंट्री ऑन अय्यूब* (पृष्ठ नहीं: रिलिजियस सप्लाई, Inc., 1994), 236. [9]लुडविग कोहलर ऐंड वाल्टर बामगार्टनर, *द हिब्रू ऐंड अरेमिक लेक्सिकन ऑफ़ द ओल्ड टैस्टामैंट,* स्टडी एडिशन, अनु. व सम्पा. एम. ई. जे. रिचर्डसन (बोस्टन: ब्रिल, 2001), 1:323-24, 687-88. [10]राल्फ गोवर, *द न्यू मैनर्स ऐंड कस्टम्स ऑफ़ बाइबल टाइम्स* (शिकागो: मूडी प्रैस, 1987), 104 में अस्थाई आश्रय का एक आधुनिक उदाहरण देखें।

[11]सेमुएल कॉक्स, *ए कॉमैंट्री ऑन द बुक ऑफ़ अय्यूब,* 2रा संस्क. (लंदन: केगन पॉल, ट्रेंच ऐंड कंपनी, 1885), 353. [12]रॉबर्ट एल. आल्डन, *अय्यूब,* द न्यू अमेरिकन कॉमैंट्री (पृष्ठ नहीं: ब्रॉडमैन ऐंड होल्मन पब्लिशर्स, 1993), 267.